

२०८ सुदी अश्वि तिथ्यादि
दशान्वितीति

आश्विन

ASHA ARCHIVES

3538

ॐ नमः शिवायि उग्रस्य ॥ ॥ गङ्गा द्रोक्षान विधिलिखित ॥ रुक्म
पादमूरखं प्रकल्प ॥ विना च मय ॥ सप्रच्छिन्निय ॥ ॥ अतं वृक्ष
सरुम्राणि, शिवविष्णुगतानि च । सूर्यनाम सरुम्राणि ॥
शिरवावन्धं ताम्यहं ॥ ॥ सप्रच्छिन्नियं तय ॥ ॥ ॐ नि
खानाथाय विद्महे, स्वच्छन्दाय धीमहि, तन्नो नमः ॥

[illegible]

कन्यासः॥ ॥ गता हृदयादि॥ ॥ क्रीं हृदयाय नमः॥ ॥
 क्रीं निरसत्या हा ॥ क्रीं निरवाये वीषट् ॥ क्रीं कवचाय क्रीं ॥ क्रीं
 नउउयाय वषट् ॥ क्रीं अमुयाय रुट् ॥ ॥ प्रालम्भयाम ॥ ॥
 क्रीं क्रीं क्रीं प्रालम्भय नमः ॥ निरवानाथाय विष्मट्, स्व कन्दाय
 धीमही, तना गद ॥ प्रवा दया ॥ ॥ ॥ ॥ लीख सचतुनमननया
 य ॥ तीर्थशवाहयायः ॥ अं कृष्णमूद्रान ॥ ॥ जैलाक्षयानिती

अन्तिकरेष्टुषानिगत्रव।गनसर्वनमदवतीर्थन्ददिदि
 वाकन॥ ॥५४॥ अमुपयु॥ सत्रष्टु॥ ॥ ५५॥ कवचायदुं
 ॥ अवाउं० न॥ ॥ ५६॥ नमदाया अमृतीकनर्प॥ ॥ ५७॥ स्व
 मृदाप्रदर्थ॥ ॥ ५८॥ मत्स्यमृदां अकाश॥ ॥ ५९॥ गगचयम
 नवेव॥ गमदावतीसत्रस्यती॥ नमदसिन्धुकावत्रिजलः
 सिंसनिधीएव॥ ॥ ६०॥ निखानाथयविघ्नहृत्स्वकृन्दायधी

मही।गनात्रुष्टुप्रवादया॥ ॥ ६१॥ तिपठित्वा॥ अमुष्टु॥ शिवार्
 तितमि॥ सिन्धुर्न॥ ॥ ६२॥ कल्प॥ अयादि॥ अमृक॥ गम॥ अम
 कनामा॥ मम॥ श्रीस्वसूदवताप्रीत्यर्थ॥ यथा॥ किन्नानमदी
 कनिष्ठा॥ ॥ ६३॥ खालसिया॥ गम॥ द्वात्रेप्रयागच॥ गी॥ गम॥ सागत्रस
 गम॥ सर्व॥ उदु॥ लु॥ लार्गम॥ ह॥ त्रि॥ गी॥ गम॥ मा॥ तु॥ ॥ ६४॥ गी॥ गम॥ गी॥ ग
 तिया॥ वृ॥ या॥ उ॥ ना॥ ल॥ मी॥ न॥ त्रि॥ पि॥ म॥ अ॥ त॥ सु॥ व॥ पा॥ य॥ र॥ या॥ वि॥ षु॥

लार्कसगच्छति ॥ ॥ गमयतीन्मालम्, लंखन, त्वपालदाय ॥
३ ॥ धनलि ॥ श्रीसूर्याय अर्घ्यं नमः ॥ श्रीबृहस्पतये नमः ॥
॥ श्रीरवगने स्वपाल ॥ धनलि ॥ शिवाय नमः ॥ ३ ॥ विष्णु ३ ६
गंगामुककयथाभक्तिप० ॥ ॥ ॥ तिस्रानविधिदेवद्वय ॥
॥ ॥ गगसंभ ॥ शिवार्तं अचम्य ॥ द्वां स्वाहा ३ ॥ गगन्यासः
॥ द्रु० अमुयय ॥ ३ ॥ द्वां अं गुहा स्या नमः ॥ द्वां तर्जनीः

स्या नमः ॥ द्वां मध्वमा स्या नमः ॥ द्वां अनामिका स्या नमः ॥ द्वां क
निष्ठा स्या नमः ॥ द्रु० अमुयय ॥ कनकलपका स्या नमः ॥
॥ ॥ तिकनन्यासः ॥ ॥ गगवकुन्यासः ॥ लिंगमूर्त्तौ वध ॥ ॥
द्वां ॥ ॥ नायकुर्द्वयकाय नमः ॥ यंतत्सूत्रषाय पूर्ववक्त्रकाय
नमः ॥ तं अथा नायदक्षिणवक्त्रकाय नमः ॥ वं वामदवाय उ
रुवक्त्रकाय नमः ॥ लंसं योजा नाय पश्चिमवक्त्रकाय नमः ॥

तता रुदयादि ॥ ॥ द्रुं रुदयाय नमः ॥ द्रुं भित्तसंस्वादा ॥ द्रुं भि
 स्वाये दोषय ॥ द्रुं कवचाय द्रुं ॥ द्रुं नग उपाय वषट् ॥ द्रुं अ
 सुायय ॥ ॥ जडालाहातन लख कास्य माल द्यका ८
 ३१ स्वडालाहातन स तस्य कापू स्य नय ॥ ॥ गंगे च यम
 न वै व गमदा व निस न स्यती । नर्मद गुंग हद्र च जल सि
 स निधि कूट ॥ माल सल खन हाय स्वपाल ॥ २ ॥ ॥ मष लख

जडालाहातन स तस्य नगडाडा वाय ॥ अम कुन ॥ द्रुं १ अ सुायय
 द्रुं ॥ अचम्य ॥ पुन न्यास ॥ कता गे ॥ ॥ प्राणायाम ॥ द्रुं द्रुं द्रुं
 प्राणायाम २ ॥ भिखानाथ विष्णु ह स्वकृन्दाय धीमही तना ९
 द्रुं १ प्रवादयात् ॥ १ ॥ पुन न्यास ॥ आदित्य ॥ भिर्व विद्या किंव
 मादित्य रूपिणी । उत यात्र कर्त नास्ति । आदित्य स्य भिवस्य च ॥
 ॥ ० ॥ भिजलं भिलिंदया ॥ ॥ तता गमय ग्राजये कूर्यात् ॥ तता ४

प्रदक्षिणीकार्यं ॥ ॥ पा०. लमि. माल. पिस्सी. नमस्कात्राय ॥ ॥
 पादपृथ्वीनमस्कृतानि ॥ ॥ गंगालीखतन ॥ ॐ सूर्याय नमः ॥
 चर्व. वृक्षने १. विष्णुव २. ब्रह्माय ३. श्रीश्वराय ४. सदाशिवाय ५. ६.
 ॥ ॥ सनकश्च सनन्दश्च, तृतीयश्च सनातनः ॥ कपिलश्च सूरिः ॥
 श्वेव वायुर्पंचगिरिवरुध ॥ यमदग्निः कौशिकश्चैव सनत्कु
 मात्रावगिरिक ॥ दिक्कतिश्चैव दधश्च, नैर्दश्चैव दवता ॥ तस्य

वृत्तिमायानुसद्धरुताम्यनासदा ॥ ॥ अश्च लामाय वृत्ति
 जीवि ॥ श्यानम ॥ ॐ न्यादिदश्च लोकपालश्च ॥ अदित्यादिनव
 ग्रहश्च १ ॥ प्रतियदादिगिचिश्च २ ॥ अश्विन्यादिनक्षत्रश्च ३ ॥ वि १०
 र्करादियाः ४ ॥ मरुवादिदादश्च गिरिश्च ५ ॥ ववादिक्तरः ६ ॥
 ७ ॥ गिर्यादिमृदुर्लक्ष्य ८ ॥ आत्मनदवश्च ९ ॥ सर्वश्च दधश्च १० ॥
 स्य दधवता श्यानम ॥ ॥ पिरुतर्प्य लमालक्ष्मयाय ॥ ॥ न्या

नलिकाया ॥ अश्विन्य ३ ॥ विष्णु ३ ॥ इति संध्या ॥ ॥ अथ जानाहि
लविधि ॥ त्रिंशद्विंश ॥ ॥ कन्या ॥ वक्र ॥ प्राणायाम ॥ तत्र
॥ ॥ ८४ अमुक ॥ दिग्धन ॥ र्यं १० ॥ रं १२ ॥ र्वं १६ ॥ ॥
जानाकाया बल रवन रुय ॥ ८४ अमुक ॥ ॥ जानाऊपलं ॥
उं हं हं हं निवसु र्धन म ॥ ८४ हं हं हं निवाय न म ॥ धाल १०८ ॥
अथ वा धाल ५४ ॥ १०८ ॥ ८४ निवाना अथ विष्णु स्वक्र न्याय धी म
ही गनो न ८४ प्र वा दया ॥ १०८ ॥ वक्रा गिं साम ना ग ८४ थ पि र

देवः प्रजापतिः ॥ वायुः सूर्यः सर्वदेवः ॥ नवदेवताः ॥
 साहिलहिलकाः कास्वायः ॥ किं निरसत्वाहः ॥ यज्ञपवीतं पत्र
 नैपविर्गं प्रजापतयः ॥ सरुर्गं पूनस्ताः ॥ अशूष्यमग्रप्रति
 मः ॥ यज्ञपवीतं पत्रं ॥ पुलाजानाककायः ॥ न्या
 सलिकायः ॥ अचमनः ॥ विष्णुः ॥ नितिजानाहिलविधिः ॥
 अथपर्ववहिवियविधिः ॥ पूचलः ॥ वलिसलस्ववियः ॥ नागय

स्वाहा ॥ १ ॥ कूर्मयित्वाहा ॥ २ ॥ कृकनायत्वाहा ॥ ३ ॥ देवदत्तायत्वा
हा ॥ ४ ॥ मधुसूत ॥ धर्मेजयायत्वाहा ॥ ५ ॥ अन्नजपलप ॥ मयरी
न ॥ ॥ लीखतान ॥ अन्नहिलकाडा ॥ अष्टपष्टा ॥ ६ ॥ अष्टाष्टाहा ॥ ७
पञ्चमस नय ॥ प्राप्तायत्वाहा ॥ १ ॥ अष्टानायत्वाहा ॥ २ ॥ व्यानाय
त्वाहा ॥ ३ ॥ उदानायत्वाहा ॥ ४ ॥ समानायत्वाहा ॥ ५ ॥ अमृताः
विष्णुमनसित्वाहा ॥ ॥ यत्थर्वृत्तजय ॥ वलिकाग ॥ उच्चि

[illegible]

यस्तु यस्तु नमः॥ क्रीं क्रीं सः॥ सूर्यय नमः॥ आत्मन ध्यान पूष्य
 नमः॥ देवस्तु ध्यान॥ ग्यां जलि॥ श्रीनागायतनस्तु ध्यान॥ क्रीं सः॥ न
 मानागायनाय, विष्णुत्मन क्रीं स्वाहा॥ आत्मन ध्यान पूष्य नमः॥ १६
 पुन देवस्तु ध्यान॥ ग्यां जलि॥ ॥ शिवया ध्यान॥ हौं हौं हौं शिवस्तु
 र्लय नमः॥ हौं हौं शिवाय नमः॥ आत्मन ध्यान पूष्य नमः॥ पुन
 देवस्तु ध्यान॥ ग्यां जलि, रुदयादि॥ स्वगुलितं, नेवय॥ उं धामि

न्यालीषत्तमद्रा, वगालेऽयसमचिर्तं॥ आहारागार्थनुमदहं प्रति
 गृह्णतु मे वलिं॥ मधुलजाय॥ उं तज्ज्यत्तु यविद्मह, सहस्रकिन
 त्तमयधीमहि, तन्नः॥ सूर्यप्रचादया॥ ॥ क्रीं विष्णु रूपाय वि
 द्मह, विष्णुतीताय धीमहि, तन्ना विष्णुः प्रचादया॥ ॥ हौं त
 त्तमहत्तमय विद्मह, वाग्विष्णुद्राय धीमहि, तन्न शिवः प्रचाद
 या॥ ॥ ऊर्पं तमय यानि॥ ॥ का॥ ॥ उवाकूस्तमसं कां कां॥

पर्यमहायति। तमानि सर्वपापघ्नं प्रहमामि दिवाकरं ॥ ॥
यस्य रुक्मगदावक्रं, गत्रायस्य बाहुर्हंसमकत्रागु कल्याणं
पद्मनाभगुणार्द्धन ॥ ॥ नमः शिवाय साक्षात्, कालन
गुमरुतव, निवेदयामि वात्मानं स्वर्गतिं यत्र नमः ॥ ॥
थ नदवस्त्रकृत्, स्थानतन ॥ ॥ थ वत, अर्घ्याया लीखन, अविस्थ
षकाय, चन्दनहणिय, मत्तुलया स्वाहा काया, सूर्य्य, नात्रा
य हा, थ निष्कदवया, स्थान, कायावकूय ॥ न्यासलिकाय ॥

[illegible]

गुरुवे नमः॥ गुरुपादुकां पूजयामि॥ ॥ ततान्नामः ॥ नैः श्रीः
 अम्नाय रूपां नैः कृक निष्ठायां कृनमः॥ नैः कृ अनामिकायां कृ
 त्वाहा ॥ नैः लव मध्यमायां लवोषधे ॥ नैः यतर्जुनीयां यदूँ ॥ नैः ऊँ
 अंगुष्ठायां ऊँ वषट् ॥ नैः कैतव गत्रय कायां अं रू ॥ मता रुदया
 दि ॥ नैः कृ रुदयाय कृनमः॥ नैः कृ गिरि स कृत्वाहा ॥ नैः लव गिरि स
 यो लवोषधे ॥ नैः यक वचाय यदूँ ॥ नैः ऊँ नग गयाय ऊँ वषट् ॥ नैः
 अं अम्नाय अं रू ॥ ॥ गीत्वाहा ॥ ॥ ततान् अर्घपाग पूजा ॥

१९

ASHA ARCHIVES

3538

नैः ऊँ नैः ऊँ नैः ऊँ अर्घपाग यपादुकां पूजयामि॥ अर्घपाग यचन्द्रना
 कृतपूर्य्यं नमः॥ ॥ गार्हाप्य पूजा ॥ वक्र न नमः॥ विष्णु व नमः॥
 गृदाय नमः॥ सदा गिवाय नमः॥ सफ मृषय नमः॥ अवाहनाय
 दिवन्दना कृतपूर्य्यं नमः॥ अर्घपाग याल रवनहाय थअक ॥
 नैः आत्मन सि नैः नमः॥ द्रीं आत्मन वन्दनै नमः॥ श्रीं आत्म
 न सि दूतै नमः॥ कृं आत्मन अदूतै नमः॥ कृं आत्मन पूर्य्य
 नमः॥ ॥ ततान् अर्घनी ॥ नैः द्रीं श्रीं कृं कृं
 ॐ नमः

२०

निष्ठा वै न प्रकृतं कतिपयं

कैच्यातमद्रुनि॥ लवनिप्त, सिद्धाय, सिसिद्रुल, पगुनगुच्छाच,
व्यदकंजापश्चानाद्रुय, चयानाम्, मद्रुनीधाय, अतिउत्तम॥

२५२ २८७ नीति शास्त्र नदि

३५२ ६

मिथ्या वै न प्रकृतं किं तु

विष्णु

नाम पादूकी पूजयामि ॥ नै विष्णु प्रगासनाय पादूकी पूजयामि ॥
नै रुद्र प्रगासनाय पादूकी पूजयामि ॥ नै ब्रह्म स्वैत प्रगासनाय
पादूकी पूजयामि ॥ नै सदाशिव प्रगासनाय पादूकी पूजयामि ॥ नै वैदिक प्र
गासनाय पादूकी पूजयामि ॥ ॥ पुनर्ध्यानं ॥ त्रयं जलि ॥ ॥ तत्ता हृदयाः
दिपूजा ॥ नै ज्ञान हृदयाय नमः ॥ ॐ दं वलिं गृह्णामि ॥ ॐ दं वलिं ॥
नै रुद्र प्रगासनाय पादूकी पूजयामि ॥ ॐ दं वलिं गृह्णामि ॥ नै प्रयाग हृदयः
पादूकी पूजयामि ॥ ॐ दं वलिं ॥ नै ब्रह्म स्वैत प्रगासनाय पादूकी पूजयामि ॥ ॐ दं वलिं ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ पादुकां पूजयामि ॥ ॐ दं वलिं ॥ जं कुडि कं धनानंदनाः
 थं कुडिकां किं सहिताय पादुकां पूजयामि ॥ ॐ दं वलिं ॥ आवाहनादि ॥
 जं पादं २ ॥ श्रीचंदनं २ ॥ श्रीसिंदूरं २ ॥ श्रीजुहंतं २ ॥ श्रीपूष्यं २ ॥ ॥ मञ्जुलजाप ॥
 जं मित्रनाथाय विद्महे सिद्धिनाथाय धीमहि ॥ तन्नालक्ष्मीप्रवादयान् ॥ १० ॥
 ॥ १० ॥ ॥ यानिमूढांदर्शयेत् ॥ स्मरन् ॥ जं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीसम्बर्का म
 ण्डलान्कक्रमयदनिहितानन्दभक्तिः सतीमा ॥ सृष्टिं चायं चतुष्कं अकूलेक

लगतं पंचकं वा न्यषट्कं ॥ चत्वारः पञ्चकाश्च पूनत्रपि चतुर्गुणस्तु कृता मधुल
 भा ॥ संक्षेपं यनतस्मै नमतगुणवत्तं तत्र वंशीकूजभा ॥ नैकात्रासनमात्रुखा
 वक्रपद्मापत्रिस्तितं ॥ षट्पुकात्रगतांदवी ॥ श्रीकृत्तिकानमाम्यहं ॥ नैव
 क्ताणीकमलन्दूसास्यवदनी ॥ माहध्वनीलीलया ॥ कोमानीत्रिपूदर्यजा
 धनकनीचक्रामुखावेषूवी ॥ वानाहीघनधानघर्घमूर्खी ॥ नैव चक्राय
 धा ॥ चामुष्णगजनाथतत्रवगजानेहं गुभमाहकाः ॥ सर्वमंगलमांगः

२५

ल्यः शिवसर्वार्थसाधका ॥ नैव श्रुत्वा चिकित्सेत्री ॥ नानायजिनमाम्मुग ॥ ॥
 अरुगंधादि ॥ स्नानतन ॥ ॥ विन्दुविय ॥ नैवाग्निनीचक्रमध्यस्थं ॥ माह
 मधुलवस्थितं ॥ नमामि शिवसानाथं ॥ तत्र वं तत्र वीप्रियं ॥ ॥ अतिष्ठ
 ककाय ॥ धडात ॥ चंदनंतिय ॥ स्नानकाकायावक्त्रेय ॥ अम्बपूर्वगतं पदं
 त्रगवती ॥ चेतन्यनूपात्मका ॥ ज्ञानश्रुवावहूलातथाहनिहोवक्रामः
 नीचिप्रयं ॥ तास्वतत्र नवपंकजंतनूगतं ॥ श्रीयागिनीपंचकं ॥ चन्द्राका

२६

निमनी विषद्वममलं मां पातु नित्यं कृजा ॥ ॥ न्यासलिकाय ॥ धनवि
 मर्जुन ॥ वेंकूलव (बु) धनाय कूलचक्रिका कसहिनाय यनाम्वा पादूकां
 पूजयामि ॥ संहारमूद्रा ॥ वेंजुम्माय रुद्र ॥ चतुनाथाय हं रुद्र स्वाहा ॥ ॥ २७
 पूजतलजतासक्याय ॥ वलिसलं बक्रुतुलुगय ॥ याचम्या ॥ ॥ विथस्वानजा
 कल्लेवकाया सेल्ले दवहिलीका गालन ॥ वेंजु कृदिक धेनी नित्यार्चन पू
 जित ॥ सिद्धमस्व ॥ नमस्तुत ॥ ॥ धनवरावा न्यादि पूजा ॥ वेंरव सहि
 ततवान्ये पादूकां पूजयामि ॥ वेंरुन सिद्धि विग ॥ पा० पू० ॥ हौं नत्त धेना

य० पा० पू० ॥ वें कृदिका ये पा० पू० ॥ हौं हनुम म पा० पू० ॥ वें सिद्धिलः
 धी पा० पू० ॥ वें वा ना धी पा० पू० ॥ स्वाहा ॥ सर्वमंगल यादि ॥ ॥ सूर्य
 सादि ॥ विथस्वानजा किलं खतन ॥ उं हं खं खवाल्काय सूर्यमूर्त्ये न
 मः क्रां क्रीं सः सूर्याय नमः श्री कृदिक धेनी नित्यार्चन सर्वार्थ कृतक
 मंगलः सादि ॥ श्री सूर्यमूर्त्ये नमः पूष्यं नमः ॥ ॥ नः सिय
 ॥ विष्णु ३ ॥ ॥ ॥ श्री १३ गोजवाय धून धुतं

ॐ नमः सूर्याय ॥ ॥ ॐ गिवग त्याय त्याहा ॥ ॐ विआग त्याः
य त्याहा ॥ ॐ आत्मग त्याय त्याहा ॥ न्यास ॥ ॐ त ४ अस्तु
य रू ३ ॥ ॐ हृदयाय नमः ॥ ॐ ॐ अर्काय गिरस त्याहा
॥ हृदु व ४ स्व क्वा लिनी गिरवाये वैषट् ॥ हृक वचाय कूं ॥ रा
न गृयाय वषट् ॥ ॐ त ४ अस्तु य रू ३ ॥ धनं हृदयाय ॥
धनं अर्घ्याय वषट् ॥ अर्घ्याय गय आवाहनादि वन्दनाकृता

२९

पूर्व नमः ॥ आत्मनं सिचनं नमः ॥ आत्मनं वन्दनं नमः ॥
आत्मनं पूर्व नमः ॥ ध्यान ॥ हं खं ख ४ खो ल्काय सूर्य मूरुः
य नमः ॥ क्रीं क्रीं स ४ सूर्याय नमः ॥ आत्मनं ध्यान पूर्व नमः
॥ दवयाती ध्यानं ययाजिलि धनं ॥ दधुयात ध्यान ॥ क्रीं स ४
नमाता गायनाय वि ४ आत्मनं क्रीं त्याहा ॥ आत्मनं ध्यान पूर्व
नमः ॥ दवयाती ध्यानं ययाजिलि धनं ॥ गिवयात ध्यान

३०

हां हां निवमुरुयनमः ॥ हां हां निवायनमः ॥ अस्मिन् अस्मिन्
 पृथ्वी नमः ॥ द्रव्याय नमः ॥ अस्मिन् अस्मिन् ॥ अस्मिन् अस्मिन्
 तस्यैवाह ॥ रुद्रवः स्वर्गा लिनी ॥ निखाये वीषः ॥ रुद्रवः वायुः ॥ ३१
 ॥ हां नि ॥ अस्मिन् अस्मिन् ॥ तः ॥ अस्मिन् अस्मिन् ॥ अस्मिन् अस्मिन्
 रुद्रा यवनादि पृथ्वी नमः ॥ त्वान् अस्मिन् अस्मिन् ॥ अस्मिन् अस्मिन्
 यः ॥ रुद्र, स्वर्ग, वलिताय ॥ यागिन् आरीषः ॥ अस्मिन् अस्मिन्
 अस्मिन् अस्मिन् ॥ अस्मिन् अस्मिन् ॥ अस्मिन् अस्मिन् ॥ अस्मिन् अस्मिन्

तपहं अस्मिन् अस्मिन् ॥ अस्मिन् अस्मिन् ॥ अस्मिन् अस्मिन् ॥ अस्मिन् अस्मिन्
 अस्मिन् ॥ ॥ अस्मिन् अस्मिन् ॥ अस्मिन् अस्मिन् ॥ अस्मिन् अस्मिन्
 अस्मिन् ॥ अस्मिन् अस्मिन् ॥ अस्मिन् अस्मिन् ॥ अस्मिन् अस्मिन् ॥ ३२
 अस्मिन् अस्मिन् ॥ अस्मिन् अस्मिन् ॥ अस्मिन् अस्मिन् ॥ अस्मिन् अस्मिन्
 अस्मिन् अस्मिन् ॥ अस्मिन् अस्मिन् ॥ अस्मिन् अस्मिन् ॥ अस्मिन् अस्मिन्
 अस्मिन् अस्मिन् ॥ अस्मिन् अस्मिन् ॥ अस्मिन् अस्मिन् ॥ अस्मिन् अस्मिन्

श्रीरवमूदा॥लिंगमूदादंष्ट्रिपेदा॥ ॥सां उयाय॥त्रवाकसूम
 सैकांशः काष्ठपयमहाश्रुतिं।तमात्रिं सर्वपापघ्नं प्रहमात्र
 मिदिवाकर्त॥ ॥यस्यरुक्मगदावर्कगद्गदायस्यवाहनी॥समक
 त्राएकल्यानं पद्मनाहाऊनाद्वर्तनं॥नमःशिवाय॥नायका
 त्तत्तगुगुहृत्तव॥निवदयामिचात्मानं स्वर्गनिःपत्रमष्टवत्र॥
 ॥श्रीसूर्यः नात्राय॥॥सदाशिवार्चनविलम्बेत् सर्वविधिपत्रिस्त
 र्त्तमस्तु॥दध्यात्तत्त्वानतन॥सूर्यायपूष्यंनमः॥नात्राय॥

३३

मयूर्यशः॥सदाशिवायपूष्यं॥ ॥अर्धपाश्यालंवनहाय
 थआत॥आत्मनसिचननमः॥आत्मनचन्दनंनमः॥॥श॥मत्तु
 लयात्त्वान्दवयात्त्वानकायाकूप॥आत्मनपूष्यंनमः॥ ॥ ३४
 न्यासलिकाय॥ ॥अर्धपाश्यालंवनहाय॥वलिस्ततय॥ ॥
 श्रीमज्जद्वयः श्रीरुद्रः॥विष्णुसनायकूंरुद्रः॥सिंहनिःश्वरः॥
 पदूंरुद्रः॥स्वाहा॥ ॥मोक्षिय॥संशिवत्त्वामस्वाहा॥विद्या॥आत्म॥
 श्रीसूर्यानात्राय॥सदाशिवपूजितास्मिन्मस्तु॥ ॥

ॐ गणेशाय नमः ॥ गणेशाय नमः ॥ गं अस्त्राय फल ३ ॥

गं अगुष्टाय नमः ॥ गीतं जनि न्यातम ॥ गं मध्यमा न्या

नमः ॥ गं अनामी को न्यातम ॥ गीतं कनिष्ठा न्यातम ॥

गं अस्त्राय फल करत ॥ रष्ट्राय नमः ॥ हृदयार्ति

गं हृदयार्ति ॥ गीतं शीरसे त्वाहा ॥ गं लिङ्गाय

विष्णवे ॥ गं कवचाय ॥ गीतं त्रयं यवतः ॥ गं अ

स्त्राय फल ॥ श नमः ॥ गं गीतं गीतं गीतं गीतं गीतं

गं गीतं गीतं गीतं गीतं गीतं

गं गीतं गीतं गीतं गीतं गीतं

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ नमः शिवाय फल ॥
३॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीतर्जनी न्या
नमः ॥ श्रीमध्यमाय नमः ॥ श्रीअना
मिकाय नमः ॥ श्रीकनिष्ठाय

नमः ॥ श्रीअत्राय फल करत पृष्ट
नमः ॥ हृदयादि श्रीहृदयोपनम
॥ श्रीसौरसेत्याह ॥ श्रीसिखिजे
वीमत ॥ श्रीकवयोरु ॥ श्रीने

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

१२१७ त्रैलोक्यमार्गवदि ३० रोज ६ व
प्राप्तो भवति किं रिचीतं ॥ गुल ७५
हर्षनाथ स्वामी स्वामि ॥

